❋ 20 अप्रैल 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] हर सितारे का अपना-अपना प्रभाव दिखाते हैं। सितारों के आधार पर जन्मपत्री और भविष्य बताते हैं। चैतन्य रूप में आप ज्ञान सितारे सारे कल्प के हर आत्मा की जन्मपत्री के आधार मूर्त हो। ज्ञान सितारों के श्रेष्ठ जन्म और वर्तमान जन्म के आधार पर प्रालब्ध के जन्म अर्थात् पूज्य पद के जन्म और पूज्य के आधार पर पुजारी के जन्म ऐसे 84 जन्मों की कहानी के आधार पर अन्य धर्म आत्माओं के जन्मपत्री का आधार है। आपकी जन्मपत्री में उन्हों की जन्मपत्री नूंधी हुई है। आप हीरो और हीरोइन पार्टधारी के आधार पर सारा ड्रामा नूंध हुआ है।

2] आप आत्माओं का पुजारीपन आरम्भ होना और अन्य आत्मओं के धर्म की स्थापना होना, आप पूर्वज आत्माओं के आधार पर ही यह छोटी-छोटी बिरादरियाँ निकलती हैं। यादगार रूप में हद के सिरों के आधार पर भविष्यदर्शी बनते हैं; क्योंकि इस समय आप चैतन्य सितारे त्रिकालदर्शी हो। हर आत्मा का भविष्य बनाने के निमित्त बने हुए हो।

❋ योग-

1] सितारों का चन्द्रमा के साथ सम्बन्ध दिखाया है। कोई चन्द्रमा के समीप हैं और कोई दूर हैं। ज्ञान सूर्य की सन्तान होते हुए भी चन्द्रमा के साथ का चित्र क्यों बना हुआ है? इसका भी रहस्य है। चन्द्रमा अर्थात् बड़ी माँ ब्रह्मा को कहा जाता है। ज्ञान सूर्य से सर्व शक्तियों के नॉलेज की लाईट जरूर लेते हैं, लेकिन ड्रामा के अन्दर पार्ट बजाने में साकार रूप में साथ आदि पिता ब्रह्मा और ब्राह्मणों का है

❋ धारणा-

1] एक शब्द में कहें- ट्रस्टी अर्थात् नष्टोमोहा। ट्रस्टी का किसी में मोह नहीं होता; क्यों? क्योंकि मेरापन नहीं है। मेरे में मोह जाता है।

2] जब किसी भी प्रकार का पेपर आता है तो घबराओ नहीं। क्वेश्चन मार्क में नहीं आओ कि यह क्यों आया? इस सोचने में टाइम वेस्ट मत करो। क्वेश्चन मार्क और फुल स्टाप। तब क्लास चेन्ज होगा अर्थात् पेपर में पास हो जायेंगे।

3] सबसे श्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन गाया हुआ है, ब्राह्मणों का नाम भी ऊंचा और काम भी ऊंचा और स्थिति भी ऊंची। जैसे ब्राह्मणों की महिमा ऊंची है वैसे अपने को सच्चे ब्राह्मण अर्थात् ऊंची स्थितिवाले अनुभव करते हो? ऊंचे ते ऊंचा बाप और ऊंचे ते ऊंचे आप। बाप और आप दोनों ऊंचे इस स्मृति में रहो तो कर्म और संकल्प ऑटोमेटिक ऊंचे रहेंगे।

4] किसी भी सेवा में सफलता प्राप्त करने के लिए नम्रता भाव और निमित्त भाव धारण करो, इसमें सेवा में सदा मौज का अनुभव करेंगे। सेवा में कभी थकावट नहीं होगी।

5] सेकण्ड में विदेही बनने का अभ्यास हो तो सूर्यवंशी में आ जायेंगे।

❋ सेवा-

1] सदा देही अभिमानी बनने का अर्थात् नष्टोमोहा बनने का सहज साधन क्या हुआ? मैं ट्रस्टी हूँ। कल्प पहले के यादगार में भी अर्जुन का जो यादगार दिखाया है – उसमें अर्जुन को मुश्किल कब लगा? जब मेरापन आया। मेरा खत्म तो नष्टोमोहा अर्थात् स्मृति स्वरूप हो गये। मेरा पति, मेरी पत्नी, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरी दुकान, मेरा दफ्तर– यह मेरा सहज को मुश्किल कर देता है। सहज मार्ग का साधन है– नष्टोमोहा अर्थात ट्रस्टी। इस स्मृति में स्वयं और सर्व को सहजयोगी बनाओ। समझा?